Peer Reviewed/ Refereed Journal

ISSN -PRINT-2231-3613ONLINE2455-8729
International Educational Journal
CHETANA
Impact Factor SJIF=4.157

Received on 23th August 2019, Revised on 8th Sept. 2019; Accepted 13th Sept. 2019

शोध–पत्र

जयपुर शहर के मुस्लिम समुदाय में बालिका शिक्षा की स्थिति और विकास में समाज की सहभागिता एक अध्ययन

* **नवीन गौड़**, *एसोसियट प्रोफेसर*
जयपुर नेशनल यूनिवर्सिटी, जयपुर
इमेल – navee.gaur@gmail.com

मुख्य शब्द– *मुस्लिम समुदाय, सहभागिता, बालिका शिक्षा, प्रश्नावली, साक्षात्कार आदि।*

सारांश

इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य जयपुर शहर के मुस्लिम समुदाय में बालिका शिक्षा की स्थिति और विकास में समाज की सहभागिता का अन्वेषण करना था। इस अध्ययन के लिए जयपुर शहर के झोटवाडा ग्रामीण के 40 मुस्लिम परिवारों की 90 बालिकाओं का सौद्देश्य प्रतिचयन द्वारा चयन किया गया। उपकरण के रूप में स्वनिर्मित प्रश्नावली तथा साक्षात्कार का उपयोग किया गया। 90 बालिकाओं में 3.33 प्रतिशत बालिकाएं ही उच्च शिक्षा प्राप्त कर रही है तथा 20 प्रतिशत माता–पिता ही उच्च साक्षर है बाकि 80 प्रतिशत निरक्षर तथा निम्न साक्षर है। जिन बालिकाओं के माता–पिता निरक्षर व निम्न साक्षर है वे अपनी बालिकाओं को उच्च शिक्षा प्राप्त कराने के पक्षधर नहीं है। जिसके पीछे सामाजिक व आर्थिक कारण व जागरूकता का अभाव है।

प्रस्तावना

भारत एक हिन्दु बाहुल्य राष्ट्र है लेकिन इसमें सभी धर्मों के लोग निवास करते हैं। संविधान के अन्तर्गत सभी को समान रूप से धार्मिक स्वतन्त्रता का अधिकार है। सन् 2011 की जनगणना के अनुसार हिन्दु समुदाय में साक्षात्कार दर 65 प्रतिशत जो सभी धार्मिक समुदाय की संयुक्त राष्ट्रीय औसत 64.8 से थोडी बेहतर है। मुस्लिम समुदाय में साक्षरता दर राष्ट्रीय औसत 53.7 प्रतिशत से कम है। मुस्लिम समुदाय में आज भी शिक्षा में लैंगिक अंतर बना हुआ है, लड़कियाँ आज भी लड़कों से काफी पीछे हैं। शिक्षा में लैंगिक अंतर का कारण गरीबी, सामाजिक एवं सांस्कृतिक कुरीतियाँ या विसंगतियाँ हैं, जिसके कारण महिलाएँ शिक्षा व्यवस्था से जुड़ नहीं पाती और जुड़ती हैं तो दो चार जमात के बाद पढ़ाई छोड़ देती है। सरकार द्वारा निर्मित नीतियों का प्रभावी क्रियान्वयन न हो पाना भी एक मुख्य कारण है। मुस्लिम बाहुल्य इलाकों में सरकार द्वारा चलाई जा रही बालिका शिक्षा की योजनाओं की पूरी जानकारी न होने के कारण वे शिक्षा से जुड़े हुए नहीं है।

उद्देश्य

- मुस्लिम समुदाय की बालिकाओं की पारिवारिक पृष्ठभूमि की जानकारी प्राप्त करना।
- मुस्लिम समुदाय में उपस्थित बालिका शिक्षा से संबंधित मुख्य समस्याओं का अध्ययन करना।
- मुस्लिम बालिकाओं की शिक्षा की स्थिति के बारे में जानकारी प्राप्त करना।
- विद्यालय में बालिकाओं के नामांकन एवं ठहराव का अध्ययन करना।

संबंधित साहित्य का अध्ययन

- **आलम, एम.एस. (2001)** ने उत्तरप्रदेश के मुस्लिम एवं गैरमुस्लिम स्कूल के छात्रों का सामाजिक–आर्थिक स्तर दुश्चिन्ता एवं शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन किया एवं पाया कि गैर मुस्लिम छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि मुस्लिम छात्रों से उत्कृष्ट है।
- **खातून, ताहिरा (2001)** अल्पसंख्यक – विद्यार्थियों का विज्ञान एउवं उनकी शैक्षिक उपलब्धियों के प्रति दृष्टिकोण पर तुलनात्मक अध्ययन किया एवं पाया कि मुस्लिम छात्राओं व हिन्दु छात्राओं के मध्यमान प्रतिशत में सार्थक अन्तर है।
- **शाहिदा, मकसूद तथा रिजवी, एम. एस. (2002)** ने केरल की मुस्लिम महिलाओं का कर्नाटक की शिक्षित मुस्लिम महिलाओं के व्यक्तित्व का तुलनात्मक अध्ययन किया और निष्कर्ष में पाया कि शिक्षित एवं अशिक्षित पृष्ठभूमि के आधार पर दोनों महिलाओं के व्यक्तित्व में सार्थक अन्तर विद्यमान है।
- **वेग, रशीद (2005)** ने मुस्लिमों के आधुनिकीकरण का मुस्लिम महिला शिक्षा पर प्रभाव का अध्ययन किया और पाया कि मुस्लिम–शिक्षा के आधुनिकीकरण ने मुस्लिम महिलाओं के जीवन के हर क्षेत्र में आत्वविश्वास पैदा किया है तथा मुस्लिम परिवारों के सामाजिक –आर्थिक स्तर को बढ़ाया है।
- **परवीन, निशांत (2006)** ने मुस्लिम बालक व बालिकाओं में शैक्षिक पिछड़ेपन का अध्ययन यिा तथा पाया कि मुस्लिमों में शैक्षिक पिछड़ापन, अभिभावकों की लापरवाही एवं बालिकाओं की सामाजिक असुरक्षा की भावना है।
- **शेख, रहीम (2006)** ने मुस्लिम –महिला शिक्षा के शैक्षिक स्तर, समस्यायें एवं अपेक्षाओं का अध्ययन किया और पाया कि मुस्लिम महिला शिक्षा का शैक्षिक स्तर बहुत कम है तथा मुस्लिम महिला शिक्षा के शैक्षिक पिछड़ेपन का मुख्य कारण धार्मिक कट्टरता एवं पर्दाप्रथा है।

शोध प्रारूप

प्रस्तुत शोध में आँकड़ों को एकत्रित करने के लिए सौद्देश्य प्रतिचयन के आधार पर मुस्लिम समुदाय की 90 बालिकाओं को सम्मिति किया गया है। उपकरण के रूप में स्वनिर्मित प्रश्नावली व साक्षात्कार का प्रयोग किया गया है। प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण करके निष्कर्ष निकाला गया है।

क्र. सं.	शैक्षिक स्तर	बालिका शिक्षा	प्रतिशत
1.	प्राथमिक स्तर	48	53.33
2.	उच्च प्राथमिक स्तर	19	21.11
3.	माध्यमिक सतर	12	13.33
4.	उच्च माध्यमिक स्तर	8	8.89
5.	उच्च शिक्षा	3	3.33
6.	कुल बालिकाएँ	90	100

उपरोक्त तालिका के आंकड़ों से यह स्पष्ट होता है कि मुस्लिम समुदाय की बालिकाओं का शैक्षिक स्तर बहुत अच्छा नहीं है। 53.33 प्रतिशत बालिकाएं प्राथमिक स्तर तक शिक्षित है। 21.11 प्रतिशत बालिकाएं उच्च्व प्राथमिक स्तर तथा, 13.33 प्रतिशत बालिकाएं माध्यमिक स्तर तक, 8.89 प्रतिशत बालिकाएं उच्च प्राथमिक स्तर तक तथा 3.33 प्रतिशत बालिकाएं उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहीं है।

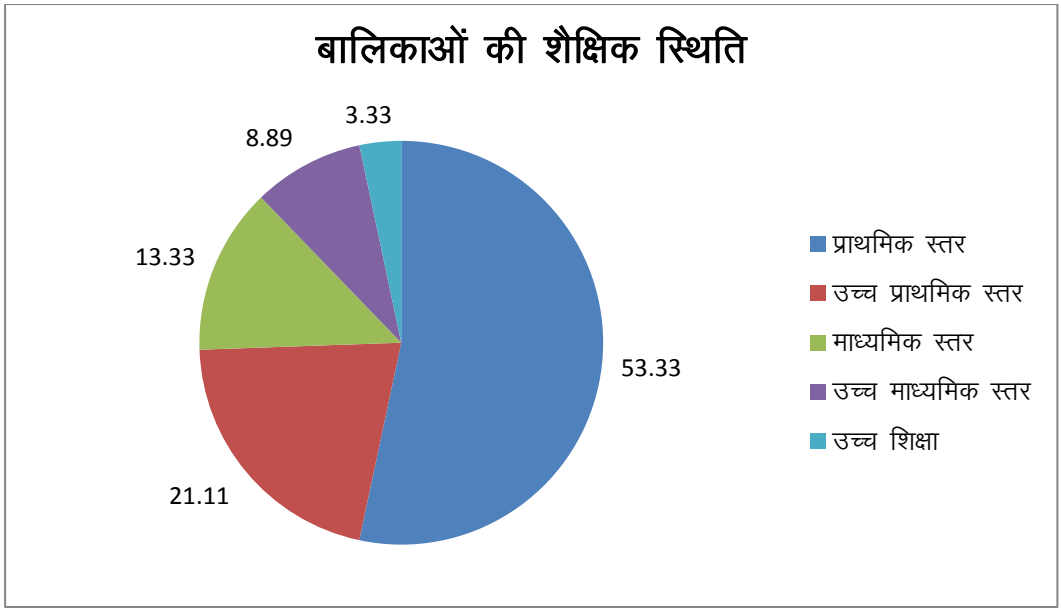

मुख्य निष्कर्ष

- मुस्लिम समुदाय में सदस्यों की संख्या अधिक है। बहुत कम परिवार ऐसे हैं जो परिवार नियोजन के बारे में सजग है। अधिकतर परिवार के मुखिया निरक्षर या कम शैक्षिक स्तर के पाये गये। जो यह स्पष्ट करता है कि उनमें शिक्षा के प्रति जागरूकता की कमी है।
- अधिकतर बालिकाओं के विद्यालय न जाने के पीछे कारण आर्थिक अभाव है। समाज में फैलती आपराधिक प्रवृत्ति एवं सामाजिक दबाव के कारण बालिकाओं को घर में रखना सुरक्षित समझते हैं। अधिकतर माता–पिता का शैक्षिक स्तर कम या निरक्षर है।
- मुस्लिम समुदाय के उच्च शैक्षिक स्तर वाले माता–पिता तथा धनी परिवार अपनी बालिकाओं को उच्च शिक्षा प्राप्त करवाते हैं।
- मुस्लिम समुदाय के 40 परिवारों की 90 लड़कियों में से 35.55 प्रतिशत लड़कियाँ विद्यालय नहीं जाती है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

- आहुजा, राम. (2012). भारतीय समाज नई दिल्लीः रावत पब्लिकेशन।
- कपिल, एच.के. (2007). सांख्यिकी के मूल तत्व, आगराः एच.पी. भार्गव बुक हाउस।
- पाण्डेय, के.पी. (2008). शैक्षिक अनुसंधान वाराणसीः विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी चौक।
- शर्मा, के. एल. (2006). भारतीय सामाजिक संरचना एवं परिवर्तन जयपुर एवं नई दिल्ली : रावत पब्लिकेशन।

*** Corresponding Author:**
नवीन गौड़, *एसोसियट प्रोफेसर*
जयपुर नेशनल यूनिवर्सिटी, जयपुर
इमेल – navee.gaur@gmail.com